'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ९१ | वाराणसी, गुरुवार, १३ अगस्त, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

मागाम (कश्मीर) २१-७-'५९

सारी जमीं हमारी—सारा जहाँ हमारा

बच्चों को आगे आने दें

आज दोपहर में हम गाँव देखने गये। उस समय हमारे साथ कुछ बड़े थे, कुछ बच्चे थे। चलते-चलते बच्चे पीछे रह जाते थे। इसलिए हमने बड़ों से कहा कि आप पीछे हटिये, बच्चों को आगे आने दीजिये। आगे की जो दुनिया है, वह बच्चों की है। आज के बच्चे कल जवान बनेंगे। फिर समाज का सारा दारोमदार उन पर आयेगा।

बच्चे आगे आ गये। हमने उनके साथ गाँव का काफी हिस्सा देखा। सैलाब से जो घर गिर गये थे, वे भी देखे। बच्चे हमें एक घर में ले गये, जहाँ रसोई बन रही थी। वहाँ हमें बच्चों ने कश्मीरी जबान भी सिखा दी। 'चावल पक रहा है' इसका कश्मीरी तर्जुमा हमने सीखा। मैं चाहता हूँ कि जब तक हम कश्मीर-वैली में हैं, तब तक कुछ न कुछ कश्मीरी सीख लूँ।

ज़बान और रस्मुलखत का सवाल

यहाँ हम एक हाईस्कूल में ठहरे हैं। स्कूल के उस्ताद हमसे मिलने आये थे। उन्होंने बताया कि यहाँके प्राइमरी स्कूलों में उर्दू, हिन्दी, पंजाबी या लद्दाख की ज़बान पढ़ायी जाती है। जब हमने पूछा कि क्या कश्मीरी नहीं सिखायी जाती? "नहीं" उन्होंने कहा, "पहले कश्मीरी सिखायी जाती थी। लेकिन अब नहीं सिखायी जाती। क्योंकि वह किस रस्मुलखत (लिपि) में लिखी जाय, अभी इसी पर सोचा जा रहा है।" सवाल यह है कि अ, आ, आदि स्वरों को किस प्रकार रस्मुलखत में बताया जाय? मेरी निगाह में यह कोई मुश्किल सवाल नहीं है। मेरी एक किताब गीता-प्रवचन का कश्मीरी तर्जुमा अभी नागरी रस्मुलखत में शाया हुआ है और अब उर्दू में शाया होने जा रहा है। कश्मीरी दोनों लिपियों में लिखी जा सकती है। मेरी राय है कि छोटे-बच्चों की तालीम 'मादरी जबान' में यानी कश्मीरी में ही होनी चाहिए।

सैलाब क्यों आया?

यहाँके बच्चों ने हमें यह सवाल पूछा कि बाबा, सैलाब क्यों आया? हमें देखकर खुशी हुई कि बच्चों के दिमाग में ऐसा सवाल पैदा हुआ। क्योंकि अल्ला जो कि हर बात पर कादिर है, मेहरबान भी है। इसलिए ऐसे सैलाब लाता है तो उसकी क्या मेहरबानी है? बच्चों ने यह एक ऐसा सवाल पूछा है, जैसा कि बड़े-बड़े नहीं पूछ सकते। हमने उन्हें जवाब दिया कि हम लोग कुछ न कुछ बुरे काम करते हैं, उन्हींका नतीजा है सैलाब! हमारा यह एतबार बिलकुल पक्का है। हम इसके लिए न कोई सबूत पेश कर सकते हैं और न पेश करना चाहते ही हैं।

मेरी निगाह में हम गलत बातें बहुत करते हैं। उनमें सबसे बुरी बात जमीन की मालकियत है। जमीन के हम मालिक कैसे हो सकते हैं? उसका मालिक तो खुदा ही हो सकता है। अगर हम उसकी मालकियत का दावा करेंगे तो वह 'शिरकत' होगी, जिसे हम कुफ्र समझते हैं। जमीन की मालकियत का हक अल्ला का ही है, हमारा नहीं। हम तो उसके खिदमतगार ही बन सकते हैं। आठ साल से हम जगह-जगह जाकर यही बात समझाते हैं और कहते हैं कि बेजमीनों को जमीन दो, ताकि वे जमीन की खिदमत कर सकें।

हिन्दोस्ताँ ही नहीं, सारा जहाँ हमारा

जब सैलाब आता है तो कोई तफरका नहीं करता, जितनी भी जमीन है, सबको वह डुबो देता है। आसमान से आफत उतरती है तो सभीपर उतरती है। कुरानशरीफ में 'तूफाने-नूह' का किस्सा आता है। नूह एक बड़े पैगम्बर थे, जो सबको अच्छी नसीहत देते थे। लेकिन लोगों ने उनकी बात नहीं मानी तथा एक बड़ा सैलाब आया। फिर अल्ला ने लोगों से पूछा कि तुम नूह की सुनते हो या 'तूफाने-नूह' की सुनते हो? करीम जमाने की यह बात ध्यान में लेने की है। अभी यहाँपर वैसा ही सैलाब आया है। इसलिए जो लोग बेघर बने हैं, उन्हें फौरन दूसरे घरों में जगह मिलनी चाहिए। इस समय जाति, मजहब, सूबा, मुल्क वगैरह भेदों का खयाल नहीं होना चाहिए। इन्सान का ही खयाल होना चाहिए। इसीलिए हम 'जय जगत्' कहते हैं। सिर्फ हमारे देश की ही जय नहीं, दुनिया की जय! बड़ी खुशी की बात है कि गाँव-गाँव के लोग हमारी बात समझते हैं। 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा' के साथ-साथ यहाँ पर बच्चे 'सारा जहाँ हमारा' गाते हैं। हमें समझना चाहिए कि हम सारे जहाँ के हैं। यह ठीक है कि हम जहाँ बसते हैं, वहाँ हमें अड़ोस-पड़ोस के लोगों की खिदमत करनी चाहिए। लेकिन हमारा दिल इतना वसी होना चाहिए कि उसमें कुल दुनिया के लिए गुंजाइश हो।

जजबात पैदा न हों

आज यहाँकी डी० एन० सी० [विरोधी पक्ष] के कुछ भाई हमसे मिलने आये, जो बहुत अच्छे जवान थे। उनकी बातें हमने सुनीं। कुछ लोग उनकी बातों को गलत मानते हैं। एक-दूसरों पर शक करके सियासत [राजनीति] दिलों के टुकड़े करती है। इसीलिए मैंने कहा था कि दुनिया के मसले सियासत से हल नहीं होंगे, रूहानियत [आध्यात्मिकता] से ही हल होंगे। लेकिन जहाँ सियासत चलती है, अलग-अलग पार्टियाँ बनती हैं, वहाँ एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि हमें आपस में वैर नहीं करना है। एक-दूसरे की बातें सुनते हुए दिल में जजबा पैदा नहीं होने देना है। अगर दिल में जजबा या खौफ पैदा हुआ तो इस विज्ञान के जमाने में हम बिलकुल गये-बीते साबित होंगे।

दिल में आग हो और दिमाग में बर्फ। दिल में तड़पन, तमन्ना हो, लेकिन दिमाग ठंढा हो। इस विज्ञान के जमाने में लड़ाइयाँ भी जजबे से नहीं होतीं। इसलिए सिर्फ जोश से काम नहीं बनता है, जोश के साथ होश भी चाहिए। दिल में जोश और दिमाग में होश। लड़नेवाले सिपाहियों को भी दिमाग ठंढा रखना पड़ता है।

बुजुर्ग कमान, जवान तीर

मैंने देखा कि आज जो जवान मुझसे मिले, उनके दिल में समाज की वर्तमान हालत के बारे में नाखुशी है। यह अच्छा है और लाजमी भी है। बुजुर्ग जिस हालत में हैं, उससे जवान कुछ आगे बढ़ते हैं, तभी तरक्की होती है। लेकिन बुजुर्गों को बनना चाहिए कमान और जवानों को बनना चाहिए तीर! आगे तीर दौड़ेगा, कमान नहीं। लेकिन तीर का कमान के साथ लगाव नहीं रहेगा तो तीर काम का नहीं रह जायगा। इसलिए जवानों को आगे बढ़ना चाहिए और बुजुर्गों के साथ लगाव भी रखना चाहिए। तभी देश आगे बढ़ेगा।

जवान आगे जाने की बात करते हैं तो हमें खुशी होती है। जवान जितना आगे जाना चाहते हैं, उतना आगे जाने के लिए बाबा तैयार है। बाबा ने तो ऐसी बात बतायी है, जैसी कि बिलकुल अगुवा जवान भी मुश्किल से बोलते हैं। बाबा कहता है कि जमीन की मालकियत मिटा दो। मैं जब केरल गया था, तब वहाँ-के जवान कम्युनिस्ट दोस्त हमेशा हमारी यात्रा में साथ आते थे। उन्होंने हमसे कहा कि आप ऐसा बोल रहे हैं, जो हम भी नहीं बोल सकते। मैं कहना यह चाहता हूँ कि सबसे आगे बढ़े हुए जो जवान हैं, उनसे भी बाबा दो कदम आगे है।

पार्टी यानी टुकड़े

मैं जवानों को समझाना चाहता हूँ कि मेरा तरीका सीखो। तुम पार्टी मत बनाओ। पार्टी याने पार्ट-टुकड़ा। तुम जल मत बनो, कुल बनो। सबको हजम करने की काबलियत सीखो। जैसे समुन्दर में सब नदी, नाले मिल जाते हैं, वैसे ही तुम भी अपने विचार में सबको हजम करने की ताकत बनाओ।

यहाँपर 'नेशनल कॉन्फ्रेन्स' [सरकारी पक्ष] अच्छे काम करती है और तुम 'डेमोक्रेटिक नेशनल कॉन्फ्रेन्स'वाले उससे भी अच्छा काम करना चाहते हो, यह बहुत अच्छी बात है। लेकिन वह काम टकरा के नहीं होगा। तुम्हें एक-एक दिल में पैठना होगा और एक-एक दिल पर कब्जा करना होगा। इस तरह दिलों में पैठकर दिल जीतते जाओगे तो तुम्हारी ही जीत होगी। आगे जमाना तुम्हारा है।

आज सुबह हम जब यहाँ आये तो उन भाइयो ने पुलिस की ज्यादती के खिलाफ कुछ नारे लगाये और फिर हमें भी कुछ बातें सुनायीं। इसमें कुछ बात होगी। लेकिन मैंने उन्हें समझाया कि मेरे स्वागत में ऐसी बातें नहीं होनी चाहिए। वे भाई समझ गये। इस तरह हम समझदारी से काम लेते हैं तो सबके दिल जुड़ जाते हैं।

प्यार में सभी वाद हजम होंगे

मैं कश्मीर से यह चाहता हूँ कि जिसके पास जितनी जमीन है, वह उसका एक हिस्सा गरीबों के लिए दे। जम्मू विभाग में लोगों ने हमें खूब दान दिया। अब हम कश्मीर-वैली में आये हैं। हमारे पहले सैलाब आया। सैलाब कहता है कि 'हमवार [समानता] बनाओ।' बाबा का भी यही सन्देश है। इसलिए कश्मीर से हमें खूब जमीन मिलनी चाहिए। प्यार से जमीन देने-वाले सामने आयेंगे तो जोर-जबर्दस्ती की, कानूनवाली बात नहीं रहेगी। मेरा मानना है कि हिन्दुस्तान प्यार से जमीन का बँट-वारा कर लेगा तो वह यहाँपर समाजवाद, साम्यवाद आदि सभी वादों को हजम कर लेगा। इसलिए वहाँ [जम्मू में] जो दान का सिलसिला जारी हुआ, वह यहाँ भी जारी रहे और कसरत से जारी रहे। यह नहीं होना चाहिए कि ग्रामदान में देरी हो तो लोग भूदान भी न दें।

भूदान से दिल नम्र बनता है और ग्रामदान से दिल के साथ दिल जुड़ जाता है। इसका भी दिल सख्त और उसका भी सख्त हो तो दिल कैसे जुड़ेंगे? दिल जुड़ने के लिए यह लाजमी है कि पहले दिल नर्म बने। इसलिए जिस किसीके पास जो भी जमीन है, उसका एक हिस्सा वह दान में दे।

◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

बुमें (कश्मीर) २७-७-'५९

गरीबी के अन्त से ही सामाजिक न्याय की स्थापना होगी

हम दो महीनों से इस स्टेट में घूम रहे हैं। अब बारह दिनों से कश्मीर-वैली में हैं। हर रोज छोटे-छोटे देहातों में भी हमारे पास लोग बड़ी तादाद में आते हैं और प्यार से हमारी बातें सुनते हैं। इतने सारे लोग क्यों आते हैं? इसलिए कि सबको यकीन हो गया है कि बाबा हमारे लिए आया है और हमारा काम कर रहा है। गरीब समझते हैं कि बाबा के आने से हम खुशनसीब होंगे। बड़े लोग, अमीर भी हमारी बातें अच्छी मानते हैं। इस तरह सभी हमारी बातों को दीन (धर्म) की, हक (सत्य) की बात मानते हैं।

गरीब-अमीर मिलकर रहें

आज गरीब और अमीरों में जो तफरके हो गये हैं, हम उन तफरकों को मिटाना चाहते हैं। तफरके पैदा होने से दिलों के टुकड़े होते हैं और समाज के भी टुकड़े हो जाते हैं। टुकड़ों-टुकड़ों में बँटकर कोई अमन से नहीं रह सकते। गरीबों के हाथ काम करते हैं और अमीरों के दिमाग। गरीब और अमीरों में तफरके हो जाने से एक बाजू हाथ हो गये हैं और दूसरी बाजू दिमाग। अल्ला ने हमें सिर भी दिया है और हाथ भी दिये हैं। इन

दोनों को अलग-अलग कर देने से कैसे काम चलेगा ? इसलिए गरीब और अमीर मिल-जुलकर रहेंगे, तभी अमन रह सकेगा।

गरीबों के घर में प्रवेश करें

अभी हम यह गाँव देखने गये थे। इस गाँव में कुछ गरीबों के मकान हैं और कुछ अमीरों के। हम एक गरीब के मकान में गये। वह मकान दोतल्ला है। नीचे के तल्ले में अन्धेरा इतना ज्यादा और जगह इतनी कम थी कि हमारे लिए ऊपर जाना बड़ा मुश्किल हुआ। ऊपर की मञ्जिल में एक लड़का बीमार था। वह भी अँधेरे में जमीन पर ही लेटा पड़ा था।

गरीब के घर में

कोई अमीर जाय तो पता चले कि गरीबों की दशा कैसी है ? हम लोग गाँव के गरीबों के घर नहीं जाते, उनके सुख-दुःख नहीं पूछते, इससे हमारा दिल सख्त बन गया है। जहाँ अमीर गरीब को नहीं पूछेंगे, वहाँ गरीब अमीरों के लिए क्या सोचेंगे ? जहाँ गरीब और अमीरों में मेल नहीं होगा, वहाँ गाँव में खुशहाली कैसे रहेगी ? इसलिए हर गाँव में गरीब और अमीरों की मिली-जुली एक ऐसी कमेटी बननी चाहिए, जो गाँव की हालत के बारे में सोचे।

ग्राम-समिति क्या करे ?

किसके घर में कौन बीमार है ? किसे दुःख है ? क्या दुःख है ? किसके पास खाने की कमी है, तंगी है ? ठंड के समय किसके पास कपड़े कम हैं ? कौन बेकार है ? किसे क्या मदद दी जा सकती है ? इन सारे सवालों के बारे में कमेटी के लोग सोचें और जिसे जितनी मदद कर सकते हैं, उसे उतनी मदद करें। शाम को हर रोज मिलकर ऐसी बातों पर सोचा जा सकता है।

यहाँ की बहनें कातना जानती हैं। वे ऊन तो कातती ही हैं, अब उन्हें सूत भी कातना चाहिए। गाँव का कपड़ा गाँव में बने, इसके लिए बोना, कातना, बुनना आदि सब गाँव में ही होना चाहिए। छोटे-छोटे लड़के भी सूत कात सकते हैं। बूँद-बूँद बारिश हर जगह होती है, वैसे ही घर-घर में बूँद-बूँद दौलत पैदा होगी। हर घर में चरखा आयेगा तो हर घर में दौलत आयेगी। इसलिए यह ग्राम-कमेटी सोचे कि गाँव में कताई का धन्धा और बुनकाम करना है। इसके लिए खादी-कमीशन और सरकार से भी मदद मिल सकती है।

इसके अलावा जमीन के बारे में भी सोचना होगा। क्या वह चन्द लोगों के हाथ में है ? जमीन की मालकियत गाँव की होनी चाहिए। दूकान भी खानगी न रहे। गाँव की दूकान रहे। उसमें भी देखना होगा कि बाहर का माल क्या खपता है ? कितना खपता है ? क्या तेल और गुड़ गाँव में ही पैदा हो सकता है ? अगर गाँव में ही पैदा हो सके तो गाँव में पैदा करें और सारे लोग अपने गाँव की ही चीजें खरीदें। हर घर का शेयर उस गाँव की दूकान में रहे।

अभी सैलाब आया। उसने सभीको समान तकलीफ दी। उसका मुकाबला भी अकेले-अकेले करने से क्या होगा ? मिल-जुलकर ही मुकाबला हो सकेगा। इसीलिए हम ग्राम-दान की बात कहते हैं। हर गाँव ग्राम-दान होना चाहिए। कश्मीर के कारनून (कार्यकर्ता) इस बात को समझें तो कश्मीर स्वर्ग बन सकता है।

कुरान का पाठ

गाँव में एक हिन्दू पण्डित होते हैं। कोई जैन, बौद्ध भी हो सकते हैं। मुसलमान तो होते ही हैं। सबको इकट्ठा होना चाहिए। सब एक साथ बैठकर कुरान की किलावत करें, ग्रन्थ का पाठ करें और सब सुनें, ऐसा वातावरण होना चाहिए। आज हमने लोगों को कुरान की किलावत के लिए बुलाया। लोग आये। सभी सुनते रहे। पढ़ा सिर्फ १३-१४ लोगों ने। हमने पूछा, क्या यहाँ इस तरह का रिवाज है ? जवाब मिला—"ऐसा रिवाज नहीं है। मस्जिद में इमाम पढ़ेगा। बाकी सुनेंगे। घर में अलग-अलग पढ़ेंगे।" लेकिन होना यह चाहिए कि सारे इकट्ठे हो जायँ और एक-एक पढ़े। आज एक लड़के ने "सूरे फातिहा" गाकर सुनाया। ऐसे ही सारे लड़के इकट्ठे हों और हर कोई थोड़ा-थोड़ा पढ़े। गाँव में जितने पढ़ सकते हैं, पढ़ें। तभी सब लोग एक दिल बनेंगे। हमें सबका दिल एक बनाना है।

ग्रामदान की परिभाषा

हमें जमीन की मालकियत मिटानी है। जमीन सबमें बाँटनी है। गाँव में धन्धे, दस्तकारियाँ खड़ी करनी हैं। तालीम का इन्तजाम करना है। बीमारों की खिदमत करनी है। सबको पूरा कपड़ा मिले, खाना मिले, काम मिले और प्रेम मिले। सब मिल-जुलकर अल्ला की इबादत करें। एक-दूसरे को आफत में मदद करें। गाँव में शादी हो तो हर घर से थोड़ी-थोड़ी मदद मिले। शादी याने गाँव का उत्सव हो। कर्जा निकालने की जरूरत न रहे। आज तो लोग एक शादी से बरबाद होते हैं। इसलिए गाँव की शादी हो याने सारा खर्चा गाँव करे। एक पर बोझ न रहे। इसका नाम है ग्रामदान।

ग्रामदान में हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई—सब एक होंगे। मालिक, मजदूर एक होंगे। इस तरह से सब तफरके मिटेंगे। सब मिलजुल कर काम करेंगे और बाँटकर खायेंगे। गाँव का झगड़ा बाहर नहीं जायगा, गाँव में ही मिट जायेगा। किसी वकील की जरूरत नहीं रहेगी। गाँव में व्यसन नहीं रहेगा। सब एक-दूसरे पर प्यार करेंगे। मत्सर नहीं करेंगे। इससे गाँव का स्वर्ग बनेगा। जैसे कुदरत खूबसूरत है, वैसे ही इन्सान भी खूबसूरत बनना चाहिए। यह कैसे बनेगा ? अगर दिल खूबसूरत बनेगा तो इन्सान भी खूबसूरत बनेगा। दिल में रहम, मुहब्बत हो। सब सचाई पर चलें। कुदरत भी खूबसूरत बनेगी और इन्सान भी खूबसूरत बनेगा तो जीने में मजा आयेगा, जायका (स्वाद, रुचि) आयेगा।

मैं क्यों आया हूँ ?

आज ये बच्चे हमारे साथ गाँव में आये थे। सब बोलते थे 'हमारा कौल'—"जय-जगत्।" बच्चों को एक साथ खाने में, खेलने में मजा आता है। वे खूब खेलें, कूदें और एक-दूसरे पर प्यार करें तो गाँव की तरक्की होगी। यही पैगाम लेकर हम आठ सालों से पैदल घूम रहे हैं। अब तक लगभग २५ हजार मील चले हैं। आज आपके गाँवमें आये हैं, प्रेम का पैगाम सुनाने। अब हमें सुनना है कि यहाँ कितना दान मिला है। जमीन की माँगें तो बहुत आयी हैं। लेकिन देनेवाले कितने हैं, यही देखना है।

हम देनेवाले और लेनेवाले की शादी करते हैं। जिनके पास जमीन है, वे लड़की के बाप हैं और जो बेजमीन हैं, वे बेटे हैं। जमीन लेगा, वह जमाई बनेगा। सिर्फ जमीन देने से नहीं चलेगा। बोने के

लिए बीज भी देना पड़ेगा। पहले साल जमीन तोड़ने के लिए हल देना होगा। दूसरे साल वह खुद काम कर लेगा। मैं यहाँ यह शादी करने आया हूँ।

यहाँ सरकार ने कानून बनाया है। लेकिन बेजमीनों को कुछ नहीं मिला है। जो कुछ मिला है, वह मुजारों (बटाइदारों) को मिला है। हम तो मालिक, बेजमीन और मुजारों का यह भेद ही मिटाना चाहते हैं।

सब एक बनें

इतना सारा काम हमें करना है। हमें कारकून (कार्यकर्ता) चाहिए। जहाँ हम जाते हैं, वहाँ बड़ा जोश पैदा होता है। लेकिन हम चले जायेंगे तो कौन काम करेंगे? कश्मीर के लिए हमारे मन में यही फिक्र है। यहाँ बहुत सारे कारकून पॉलिटिकल पार्टीज में बँटे हुए हैं। एक गाड़ी को दो बैल जुड़े हैं। एक बैल अपना बोझ दूसरे पर डाले और दूसरा पहले पर डाले तो गाड़ी आगे नहीं बढ़ सकती। इधर है एक सियासी (राजनैतिक) पार्टी का बैल और उधर है दूसरी सियासी पार्टी का बैल। दोनों एक-दूसरे पर अपना बोझ ढकेलते हैं। इसलिए गाड़ी रुक गयी है। हमारे सारे देश की यही हालत है। इसलिए हम सियासतदाँ (राजनैतिक) कारकूनों (कार्यकर्ता) को कहते हैं कि तुम इतने नादाँ मत बनो, आपस-आपस में झगड़ो मत। गरीबों के काम में एक हो जाओ।

अल्ला इनको एक बनने की अक्ल दे। ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

वटलख (कश्मीर) २८-७-'५९

समाज-विज्ञान का पहला सूत्र—बाँट बाँटकर खाओ

लगभग सवा दो साल पहले हम कन्याकुमारी में थे। वह हिन्दुस्तान के बिलकुल जुनुब (दक्षिण) में है, जहाँ तीनों समुंदर एक हो गये हैं। कन्याकुमारी के बाद सीलोन शुरू होता है। समुंदर के उस पार सीलोन है और इस पार कन्याकुमारी। कन्याकुमारी भारत का सिर है। आज जहाँ हम बैठे हैं, यह भारत का पाँव है। उससे एकदम उलटी दिशा है। वहाँ समुन्दर है, यहाँ (बुलरलेक) झील। समुन्दर खारा है, झील मीठी। कन्याकुमारी में एक दिन हम समुंदर के किनारे बैठे थे। लहरें आती थीं और हमारे सिर को छूती थीं। वहाँ हमने हाथ में समुंदर का पानी लेकर प्रतिज्ञा की थी कि हिन्दुस्तान में ग्राम-स्वराज्य की स्थापना होगी, तब तक हमारी पदयात्रा जारी रहेगी। तबसे हमारी यह यात्रा जारी है। लेकिन हमारी यह यात्रा पहले ही शुरू हो गयी थी। इसे अब करीब आठ साल हो गये हैं।

हमारे सफर का सबब

जिस काम के लिए हम कन्याकुमारी गये थे, उसी काम के लिए यहाँ भी आये हैं। वह काम है, दिल के साथ दिल जुड़ जाय। अपना एक समाज बने। मजदूर-मालिक, यह तफरका मिटे। सभी बेजमीनों को कुछ न कुछ जमीन मिले। सब मिलजुलकर काम करें। बाँटकर खायें। गाँव का कुनबा (पटिदार) बनायें।

हम बेजमीनों के लिए जमीन माँगते हैं। हमें रोज कुछ न कुछ जमीन मिल रही है। कोई १०, १५ कनाल देता है तो किसीने ३०, ४० कनाल भी दी है।

हम कश्मीर-वैली में पीर-पंजाल लाँघकर आये हैं। रास्ते में एक सरपंच का घर था। उसने हमसे पूछा कि "आप दूध लेंगे।" मैंने कहा, "जी हाँ! पर दूध के साथ आप क्या देंगे?" उसने कहा, "शक्कर, शहद या और जो कहिये?" "शहद" मैंने कहा, "हमारे लिए यह नास्ता नाकाफी है।" उन्होंने पूछा तो और क्या चाहिए? मैंने कहा "मिट्टी। मैं मिट्टी पाने आया हूँ।"—दूध के साथ कुछ मिट्टी दो।"—तब उस भाई ने हमें ४० कनाल जमीन दी। इस तरह कश्मीर में लोग जमीन दे रहे हैं।

कश्मीर में गुंजाइश है

लोग कहते हैं कि इस स्टेट में सरकार ने जमीन का मसला हल कर लिया है, लेकिन हम जानते हैं कि कश्मीर में जमीन का मसला हल नहीं हुआ है। जमीन के मालिकों ने आपस आपस में काफी जमीन बाँट ली है। इसके बाद थोड़ी-सी जमीन जो बची है, वह मुजारों को मिली है। बेजमीनों को कुछ नहीं मिली है। इसलिए कश्मीर में भूदान के काम को बहुत गुंजाइश है। हमें हर रोज कुछ न कुछ जमीन मिलती है। हमारे भाई कुछ काम करते हैं और जमीन प्यार से लाते हैं। लेकिन हम कहते हैं कि यह नाकाफी है। हमें हर मालिक से जमीन मिलनी चाहिए। सब का जमीन पर हक है और सबको जमीन मिलनी चाहिए। अल्लाह के पास कौन पहुँचेगा और कौन नहीं पहुँचेगा! यह सवाल नहीं है। कुल लोग अल्लाह के पास पहुँचेंगे। वैसे ही हमें जमीन भी कुल लोगों से मिलनी चाहिए।

मजदूर और मालिक

हमारे सामने यह झील (सरोवर) है। उसके चारों ओर पहाड़ हैं। हम भी एक पहाड़ पर बैठे हैं। इन सब पहाड़ों पर पानी बरसता है और वह सारा पानी नीचे भेज देते हैं—वह सारा पानी मिलकर यह 'बुलरलेक' बना है। उसी तरह यह बेजमीन लोग बुलर लेक हैं और ये मालिक हैं पहाड़! जैसे हर पहाड़ अपना पानी बुलर में भेजता है वैसे ही हर मालिक को बेजमीनों को जमीन देनी चाहिए।

[चालू]

अनुक्रम

१. सारी जमीं हमारी—सारा जहाँ हमारा.
मागाम. २१ जुलाई '५९ पृष्ठ ५८५
२. गरीबी के अन्त से ही सामाजिक न्याय...
बूमें २७ जुलाई '५९ पृष्ठ ५८६
३. समाज-विज्ञान का पहला सूत्र...
बटलख २८ जुलाई '५९ ,, ५८८

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी